



HINDI A1 – STANDARD LEVEL – PAPER 1
HINDI A1 – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1
HINDI A1 – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Thursday 17 May 2001 (afternoon)
Jeudi 17 mai 2001 (après-midi)
Jueves 17 de mayo de 2001 (tarde)

1 hour 30 minutes / 1 heure 30 minutes / 1 hora 30 minutos

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a commentary on one passage only. It is not compulsory for you to respond directly to the guiding questions provided. However, you may use them if you wish.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- Ne pas ouvrir cette épreuve avant d'y être autorisé.
- Rédiger un commentaire sur un seul des passages. Le commentaire ne doit pas nécessairement répondre aux questions d'orientation fournies. Vous pouvez toutefois les utiliser si vous le désirez.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario sobre un solo fragmento. No es obligatorio responder directamente a las preguntas que se ofrecen a modo de guía. Sin embargo, puede usarlas si lo desea.

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (क) तथा (ख) । इन दोनों में से किसी एक पर व्याख्या लिखिए ।

(क)

पिता जी अपनी पुत्री का सम्बन्ध ऐसी जगह नहीं कर सकते थे, जहां बड़े-बुजुर्गों तथा परिवार की मध्यस्थता न हो, उनकी ओर से यह जिम्मेदारी स्वीकार न थी ।

5 किन्तु जीजी के लिए यह संदेश बहुत महत्वपूर्ण था जीजी को सहसा ही लगा कि वैजयन्त अवस्यक नहीं है, वह वस्यक ही गया है पुरुष है, दृढ़ है अपने जीवन के निर्णय स्वयं कर सकता है, विरोधों से लड़ सकता है दूसरों के द्वारा आरोपित जीवन का तिरस्कार कर, स्वतन्त्र रूप से जी सकता है । इस लिए जीजी को यह सम्बन्ध पूर्णतः स्वीकार था ; इतना ही नहीं केवल यही सम्बन्ध स्वीकार था ।

10 बड़ी विचित्र स्थिति थी । पिता जी अपनी ओर से एक निश्चय कर, अपने स्थान पर बैठ गये थे, और जीजी उसके ठीक विपरीत दूसरा निश्चय कर अपने स्थान पर स्थित हो गई थीं । शेष लोग स्तब्ध खड़े थे कि अब क्या होगा ? जीजी की कामनाएँ पिता जी के अस्वीकार के नीचे दबकर नस्ट हो जाएंगी, अथवा जीजी पिता जी की सारी सत्ता का तिरस्कार कर, उनसे अपनी बात मनवा
15 लेंगी ? उन्हें मना न पायीं तो उनके अस्वीकार के बावजूद अपने दम पर वे यह विवाह कर लेंगी नहीं ! यह संभव नहीं लगता था । जीजी, वैचारिक रूप से कितनी भी स्वतन्त्र हो चुकी हों, किन्तु कर्म की दुस्साहसपूर्ण स्वतन्त्रता का कोई प्रमाण अभी जीजी ने नहीं दिया था । और उसके साधन भी तो नहीं थे, उनके पास ।

20 जीजी और पिता जी के पक्षों में कोई संवाद भी तो नहीं हो रहा था कि किसी समाधान की आशा की जा सकती । दोनों ही पक्ष सारे सम्पर्क-सूत्र तोड़कर अपनी जगह अड़े हुए थे ! वैसे इस विषय में जीजी और पिता जी का संवाद होना भी क्या था ! यह ऐसा विषय नहीं था, जिस पर पिता जी अपनी पुत्री के साथ विचार-विमर्श करते । वे उन संस्कारों के व्यक्ति थे, जो पुत्री का
25 विवाह स्वयं तय करते थे ।

नरेन्द्र कोहली “क्षमा करना जीजी” 1995 भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली 110003

- इस गद्य के विषयवस्तु द्वारा लेखक क्या कहना चाहता है ?
- भाषा तथा शैली पर विचार विमर्श करते हुए बताएं कि लेखक अपनी बात कहने में कहां तक सफल हुआ है ?
- जीजी तथा पिता जी के दृष्टिकोण के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं ?
- इस गद्य के विषयवस्तु ने आप पर क्या प्रभाव डाला है ?

(ख)

देह के इर्द-गिर्द

तुम्हारे लिए मर नहीं सकता
मरना तो देह का होता है
और देह को घर के लिए बचे रहना है
कर्ज चुकाना है
5 लेना है नया उधार कि
वंशजों को जीने का बहाना मिले

समाज को इसी पर करने हैं अन्याय
इसी से सिद्ध करने हैं
प्रेम के निष्फल प्रयोग
10 इसी को ध्वस्त करते हुए
करनी है संपूर्ण जीवन की व्याख्या

कानून इसके सीने पर जलकर
प्रमाणित करेगा कि वह
बनाया तो
15 कमजोर की रक्षा के लिए था
पर क्या करें उसकी शक्ति
कुछ मजबूत मुट्ठियों की
बंधक हो गई

इस देह का उपयोग उन्होंने भी
20 किया है अपने पक्ष में
जो हर जगह होते हैं
और कहते हैं कहीं नहीं हैं वे

उन्होंने भी इसका बहिष्कार नहीं किया
जो कीरमकीर निरगुनियां हैं
25 मार तो इसे कोई भी सकता है
और केवल तुम्हारे लिए भी यह
जीवित रह सकती है !

हेमंत कुकरेती "आजकल" दिसंबर 1998 पटियाला हाउस नई दिल्ली 110001

- कविता का केन्द्रीय भाव क्या है ? क्या कवि अपनी बात कहने में सफल हुआ है ?
 - कविता में कवि ने काल्पनिक पक्ष को कैसे प्रस्तुत किया है ?
 - कविता की भाषा तथा शैली के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं ?
 - इस कविता के विषयवस्तु ने आप पर क्या प्रभाव डाला ?
-